ध्यान ही गुरु है

दावेदार गुरुओं से सावधान

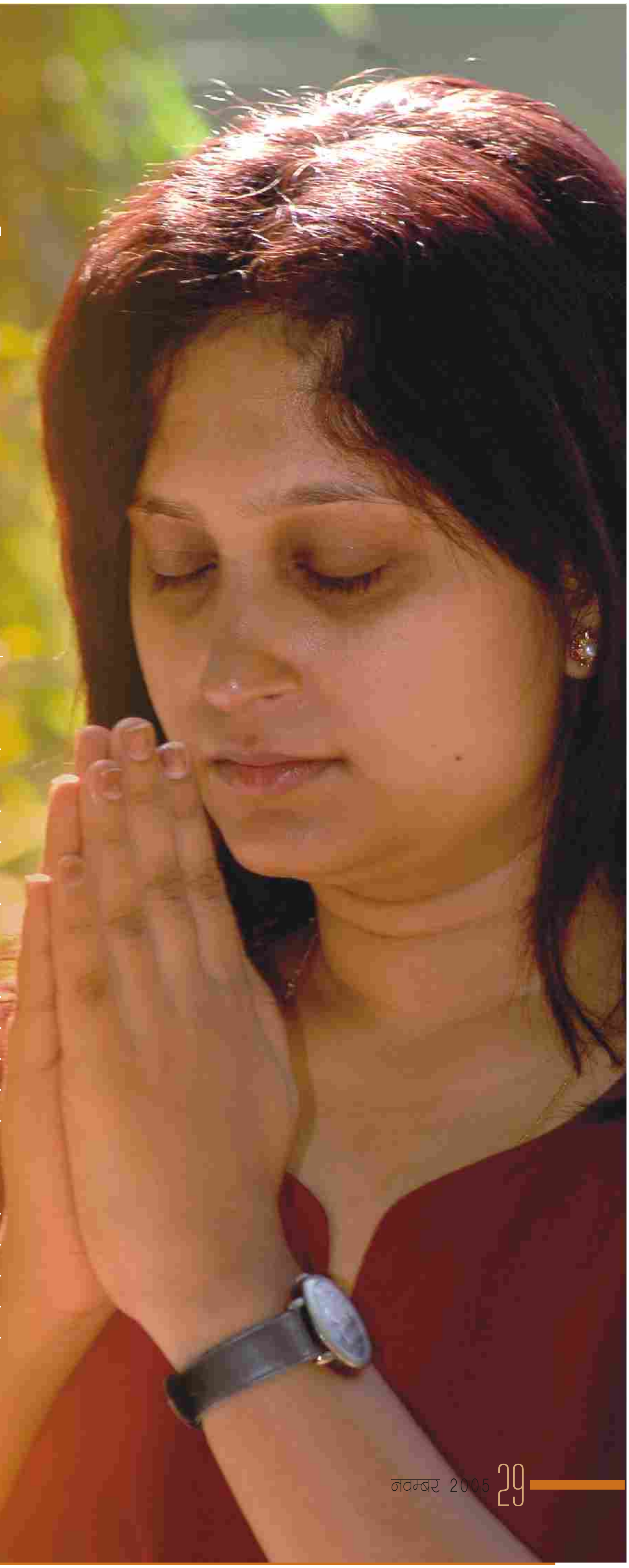

पंचे सोहहि दरि राजानु। पंचा का गुरु एकु धिआनु।।

'पांच का एक गुरु है और वह ध्यान है।'

अगर तुम पांच में बिखरे रहे तो भटक जाओगे। अगर तुमने एक को पकड़ लिया तो तुम उपलब्ध हो जाओगे।

कबीर ने एक पद कहा है। राह से चलते, एक स्त्री को चक्की पीसते कबीर ने देखा और कहा कि दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय। ये दो जो पाट हैं, इनके बीच जो भी पड़ गया, वह पिस गया। कबीर अपने शिष्यों को कह रहे थे कि ऐसे ही द्वैत की चक्की के बीच जो पड़ गया, वह पिस गया, वह बच न सका।

कबीर के बेटे ने कहा, लेकिन इस चक्की में एक चीज और है। इसके बीच में एक कील है। जिसने उसका सहारा ले लिया, उसके संबंध में भी कुछ कहें। तो कबीर ने दूसरे पद में कील का स्मरण किया है। कहा है कि दो पाटों के बीच में जो पड़ गया, वह तो नहीं बचा; लेकिन जिसने दो के बीच उस एक का सहारा ले लिया, उसे फिर कोई न मिटा सका। चक्की में भी जो गेहूं का दाना कील का सहारा ले लेता है फिर दो पाट उसे पीस नहीं पाते।

तो चाहे दो कहो, चाहे तीन कहो, चाहे पांच कहो, चाहे नौ कहो, चाहे अनंत-अनंत कहो। भटकाव के बहुत नाम हो सकते हैं, पहुंचने का नाम एक है। फिर तुम जो भी भटकाव चुनोगे, उससे गुजरने की प्रक्रियाएं अलग-अलग हो जाएंगी। अगर नानक की इस प्रक्रिया को समझना हो तो इसका अर्थ हुआ कि जब तुम भोजन करो, तब ध्यान पर ध्यान देना। भोजन भीतर जा रहा है, स्वाद निर्मित हो रहा है, तुम ध्यानपूर्वक इस स्वाद को लेना। अगर तुमने ध्यानपूर्वक यह स्वाद

लिया तो तुम थोड़ी ही देर में पाओगे कि स्वाद तो खो गया, ध्यान हाथ में रह गया। क्योंकि ध्यान बड़ी प्रज्वलित अग्नि है। स्वाद तो जल कर राख हो जाएगा, ध्यान हाथ में रह जाएगा।

तुम एक सुंदर फूल को देख रहे हो, ध्यानपूर्वक देखना, थोड़ी ही देर में तुम पाओगे, फूल तो खो गया, ध्यान हाथ में रह गया। क्योंकि फूल तो सपने जैसा है, ध्यान शाश्वत है। अगर तुमने गौर से एक सुंदर स्त्री को देखा और गौर से देखते रहे और ध्यान दिया, भटक न गए विचारों में, तो तुम पाओगे स्त्री तो खो गयी—जैसे पानी पर बनी एक लहर—ध्यान हाथ में रह गया। हर इंद्रिय में अगर तुमने सावधानी बरती, तो तुम पाओगे इंद्रिय के रूप तो खो जाते हैं, निरूप, अरूप ध्यान हाथ में रह जाता है। और उस ध्यान को जिसने पकड़ लिया, फिर उसे मिटाने वाला कोई भी नहीं।

तो नानक कहते हैं, इन पंच इंद्रियों का एक ही गुरु है और वह ध्यान है। और उसी एक ध्यान में पांचों इंद्रियां अपने जल को डालती हैं।

इसीलिए तो एक बहुत महत्वपूर्ण घटना है—मनस्विद अध्ययन करते हैं—और वह यह कि आंख देखती है, कान सुनते हैं, हाथ छूता है, नाक गंध लेती है; न तो आंख सुन सकती है, न कान देख सकते हैं, फिर इन सबको जोड़ता कौन है?

मैं बोल रहा हूं। तुम मुझे देख भी रहे हो, तुम मुझे सुन भी रहे हो। कान से तुम सुन रहे हो, आंख से तुम देख रहे हो। लेकिन ऐसा तुम कैसे पक्का कर सकते हो कि जिस व्यक्ति को तुम देख रहे हो वही बोल भी रही है? आंख और कान तो अलग-अलग हैं। एक खबर देता है कि आवाज आ रही है, एक खबर देता है कि कोई दिखायी पड़ रहा है। लेकिन तुम दोनों को जोड़ कैसे लेते हो? कौन जोड़ता है दोनों को कि जिसको हम देख रहे हैं वही बोल रहा है?

जरूर तुम्हारी दोनों इंद्रियों के पीछे कोई एक जगह होनी चाहिए, जहां सभी इंद्रियां अपने अनुभव को संगृहीत करती हैं। आंख भी वहीं डाल देती है दृश्य को, कान भी वहीं डाल देता है शब्द को, नाक वहीं डाल देती है गंध को, हाथ वहीं डाल देते हैं स्पर्श को। एक बिंदु पर सभी इंद्रियां अपने-अपने अनुभव डाल देती हैं। वही बिंदु ध्यान है। वहीं सब चीजें संगृहीत हो जाती हैं और तुम अनुभव कर पाते हो।

नहीं तो जीवन बड़ा विक्षिप्त हो जाए। तुम्हें पता ही न चले कि तुम जिसे देख रहे हो वही बोल रहा है, कि जिसे तुम सुन रहे हो उसी के शरीर की गंध भी आ रही है, तुम खंडित हो जाओगे। पांचों को जोड़ने वाला कोई चाहिए। ये पांचों मार्ग किसी एक जगह पर जाकर मिलते हैं। और इन पांचों का अनुभव संगृहीत हो जाता है। उस जगह का नाम ध्यान है।

नानक कहते हैं, ध्यान पांच का गुरु है। पंच का एक ध्यान ही गुरु होता है।

ये पांचों तो शिष्य हैं। लेकिन तुमने शिष्यों को गुरु बना लिया है। और गुरु को तुम बिलकुल भूल गए हो। तुमने नौकर-चाकरों को मालिक बना लिया है, मालिक का तुम्हें स्मरण न रहा। तुम इंद्रियों की मान कर चलते हो, ध्यान से तुम पूछते ही नहीं। तुम्हें इस बात का खयाल ही भूल गया है कि इंद्रियां तो ऊपर-ऊपर हैं, गहरे में कौन छिपा है? इंद्रियां तो ध्यान के ही फैलाव हैं। इंद्रियों के माध्यम से ध्यान ही जगत में जा रहा है।

जब तुम भोजन करो, तब ध्यान पर ध्यान देना। भोजन भीतर जा रहा है, स्वाद निर्मित हो रहा है, तुम ध्यानपूर्वक इस स्वाद को लेना। अगर तुमने ध्यानपूर्वक यह स्वाद लिया तो तुम थोड़ी ही देर में पाओगे कि स्वाद तो खो गया, ध्यान हाथ में रह गया

अगर तुम्हें जीवन को सुचारू रूप से चलाना हो तो इंद्रियों की मत सुनना। क्योंकि इंद्रियां तो अधूरी हैं। आंख को आंख का पता है। कान का कान को पता है। मुंह का मुंह को पता है। तुम उन की मान कर चलोगे तो मुश्किल में पड़ जाओगे। और अक्सर तुम पाओगे कि लोगों ने इंद्रियों की मान ली है। और तुम हर आदमी में किसी न किसी एक इंद्रिय की प्रधानता पाओगे जिसकी उसने गुलामी कर ली है। कोई है जो स्वाद का दीवाना है। बस! उसे भोजन; और भोजन सब कुछ है। उसे कुछ और सूझता नहीं। वह खाए चला जाता है।

सम्राट हुआ नीरो; उसने चिकित्सक रख छोड़े थे। क्योंकि एक दफा खाने में उसका मन न भरता। दिन में दो दफा खाने में मन न भरता था। तीन भी तृप्ति न होती, चार भी तृप्ति न होती, वह चाहता कि चौबीस घंटे भोजन ही करता रहे। बस, स्वाद ही सब कुछ हो गया। तो उसने चिकित्सक रख छोड़े थे। वह खाना खाए, वे उसे उलटी करवा दें। उलटी करके वह फिर खाने पर जुट जाए। जैसे ही खाना पूरा हो, चिकित्सक उसको दवा देकर फिर उलटी करवा दें। वह फिर खाने पर जुट जाए।

तुम कहोगे, यह आदमी पागल था। लेकिन तुम पाओगे इसी तरह का पागलपन कम-ज्यादा मात्रा में लोगों के जीवन में है। किसी को आंख का नशा है। बस, वह सौंदर्य की तलाश में घूम रहा है। दर-दर, द्वार-द्वार ठोकर खा रहा है कि कोई सुंदर चेहरा, कोई सुंदर शरीर दिख जाए। आंख की मान कर चल रहा है। आंख की अगर मान कर चले, तो भी अंधे रहोगे। क्योंकि आंख असली देखने वाला तत्व नहीं है। आंख तो सिर्फ झरोखा है, खिड़की है। उससे जो झांकता है, वह कोई और है। और खिड़की से मत पूछो, झांकने वाले से पूछो। इंद्रियां तो झरोखे हैं। कोई

संगीत में दीवाना है। बस, उसको धुन का नशा चढ़ा हुआ है। कोई शरीर की साज-सज्जा में लगा है। कोई स्पर्श का दीवाना है, कोई गंध का दीवाना है।

लेकिन सभी इंद्रियों के दीवाने हैं और नौकरों की मान कर चल रहे हैं। मालिक से पूछो। मालिक कौन है सारी इंद्रियों का, जिसके हटते ही इंद्रियां व्यर्थ हो जाती हैं?

ऐसा हुआ कि उन्नीस सौ दस में काशी के नरेश का आपरेशन हुआ अपेंडिक्स का। तो उन्होंने कहा कि मैंने कसम ले रखी है कि बेहोशी की कोई दवा कभी न लूंगा। कभी कोई नशा न करूंगा। तो कोई अनस्थेशिया मैं नहीं ले सकता हूं। आप आपरेशन कर दें, लेकिन बिना किसी बेहोशी की दवा के। होश मैं न गवांऊंगा। डाक्टरों ने कहा, यह कैसे हो सकेगा? यह कोई छोटा-मोटा कांटा निकालना नहीं है। यह तो पूरा पेट चीरा-फाड़ा जाएगा, हड्डी काटी जाएगी, घंटों लगेंगे। लेकिन काशी-नरेश ने कहा, आप उसकी फिक्र न करें। सिर्फ मुझे मेरी गीता पढ़ने दें। मैं अपनी गीता पढ़ता रहूंगा, आप अपना आपरेशन करें।

कोई और उपाय न था। और अगर आपरेशन न किया जाए, तो भी मृत्यु होनी निश्चित थी। तो फिर यह खतरा लिया गया। कि मृत्यु तो होनी ही है, एक संभावना है, शायद यह आदमी बच जाए।

काशी-नरेश गीता का पाठ करते रहे और आपरेशन जारी रहा। आपरेशन पूरा हो गया। चिकित्सक चकित हुए कि यह कैसे संभव है? कितनी पीड़ा हुई होगी! लेकिन काशी-नरेश ने कहा, मुझे पता न चला, क्योंकि मेरा ध्यान तो गीता पर लगा था।

पता तो ध्यान से चलता है। अगर तुम्हारा ध्यान बदल जाए, तुम्हें जो-जो पता चलता है वह बदल जाएगा। पता ध्यान से चलता है, तुम्हें वही दिखायी पड़ता है जिस तरफ तुम ध्यान देना चाहते हो। जिस तरफ तुम ध्यान नहीं देना चाहते, वह तुम्हें पता ही नहीं चलता। तुम उसी बाजार से गुजर जाओगे, लेकिन पता तुम्हें उन्हीं चीजों का चलेगा जिन पर तुम ध्यान देना चाहते हो। चमार गुजरेगा, जूतों पर नजर रहेगी। जौहरी गुजरेगा, हीरों पर नजर रहेगी। तुम्हारी नजर वहां रहेगी जहां तुम्हारा ध्यान है। तुम वही देख लोगे जहां तुम्हारा ध्यान बह रहा है।

इसलिए सारे जीवन की गहनतम कला ध्यान की मालकियत को उपलब्ध कर लेना है। फिर अगर तुम परमात्मा की तरफ बह रहे हो, संसार खो जाएगा। इसलिए तो ज्ञानी कहते हैं, संसार माया है। माया का यह मतलब तो नहीं है कि नहीं है। है तो पूरी तरह। लेकिन ज्ञानी कहते हैं, संसार माया है। और उन्होंने जाना है कि माया है। जानने का कारण यह है कि जब पूरा ध्यान परमात्मा की तरफ बहता है, संसार खो जाता है। क्योंकि जिस तरफ ध्यान नहीं है, उसके होने न होने में कोई अंतर नहीं रह जाता है। जिस तरफ ध्यान है, उस तरफ हम जीवन देते हैं। जहां ध्यान है, वहां अस्तित्व पैदा हो जाता है। जहां से ध्यान हट गया, वहां से अस्तित्व खो जाता है।

ज्ञानी कहते हैं, परमात्मा सत्य है, संसार असत्य। क्या इसका यह अर्थ है कि यह जो संसार दिखायी पड़ रहा है, वह नहीं है? यह पूरी तरह है, लेकिन ज्ञानी का ध्यान हट गया। अगर तुम्हारे मन में लोभ है तो धन सत्य है। अगर लोभ खो गया तो धन मिट्टी। धन अपने कारण धन नहीं है, तुम्हारे ध्यान के कारण धन है। वासना है तो शरीर बड़ा महत्वपूर्ण है, वासना खो गयी तो शरीर गौण हो गया।

जहां से ध्यान हटेगा, वहां से अस्तित्व हट जाता है। जिस तरफ ध्यान जाएगा, वहां अस्तित्व प्रगट हो जाता है। और जिस दिन तुम यह समझ लोगे, उस दिन तुम अपने मालिक हो जाओगे। क्योंकि तुम्हें अपने भीतर के मालिक का पता चल गया। अब तुम नौकरों की नहीं सुनते। अब तुम गुलामों की मान कर नहीं चलते। अब तुम शिष्यों से नहीं पूछते। उनसे क्या पूछना है जिन्हें खुद ही पता नहीं है! अब तुम गुरु से पूछते हो।

नानक कहते हैं, 'पंच का एक ध्यान ही गुरु है। जो कोई उसके संबंध में कहे, वह विचारपूर्वक कहे। क्योंकि उससे गहन, गंभीर और कोई बात नहीं।' बहुत सोच कर कहे। ऐसे ही न कह दे। ऐसे बातचीत में न कह दे। क्योंकि उससे मूल्यवान कुछ भी नहीं है। उससे ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ भी नहीं है। लेकिन लोग ध्यान के संबंध में भी बिना जाने बात करते रहते हैं। ऐसे लोगों ने जगत को बड़ी उलझन में डाल दिया है। क्योंकि उन्हें कुछ पता ही नहीं है। लोगों को बिना पता भी कहने में रस आता है।

मेरे पास लोग आते हैं। सैंकड़ों तरह की ध्यान की पद्धतियों पर हम प्रयोग कर रहे हैं। लोग आते हैं और कहते हैं, फलां आदमी ने कह दिया, यह तुम क्या कर रहे हो? यह भी कोई ध्यान है? मैं उनसे पूछता हूं कि तुम उस आदमी को जाकर पूछो कि उसने कभी ध्यान किया है? वह ध्यान को जानता है? अगर ध्यान को जानता है तो उससे सीख लो। क्योंकि सवाल यह नहीं है कि मुझ से सीखा कि किससे सीखा। सवाल यह है कि ध्यान सीखा। वह जाकर उस आदमी को वापस पूछते हैं। वह कहते हैं, ध्यान?

ध्यान का मुझे पता नहीं, न मैंने कभी किया। लेकिन कौन सी चीज ध्यान नहीं है, यह कहने में वह तैयार हैं! जिसे ध्यान का कोई भी पता नहीं है वह भी ध्यान के संबंध में मंतव्य दे देगा।

नानक कहते हैं कि सोच-विचार कर कहना। होश से कहना। जानते हो, तो ही कहना।

दुनिया अज्ञानियों के कारण नहीं भटक रही है, दुनिया उन ज्ञानियों के कारण भटक रही है, जो ज्ञानी नहीं हैं। अज्ञानी क्या भटकाएगा? लेकिन ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें बताने का रस है। जिन्हें खुद भी पता नहीं है। जिन्हें ठीक-ठीक कुछ भी होश नहीं है कि वे क्या कह रहे हैं! क्यों कह रहे हैं! किन कारणों से कह रहे हैं! लेकिन लोग कहे चले जाते हैं।

और इस संसार में नासमझ खोज लेना कठिन नहीं है। अगर तुम बोलना शुरू कर दो—कुछ भी कहने लगो, अनर्गल भी बको—तो भी तुम थोड़े दिन में पाओगे कि कुछ शिष्य तुमने इकट्ठे कर लिए। तुम से भी बड़े मूढ़ जगत में हैं। तो शिष्य को खोज लेना कोई अड़चन की बात नहीं है। तुम में भर थोड़ी विक्षिप्तता हो, दंभ हो, जोर से चिल्ला कर कहने की कोई आदत हो, लोग इकट्ठे हो जाएंगे। कोई न कोई तुम्हारे पीछे चलने लगेगा। तुम्हारे आसपास घटनाएं घटने लगेंगी। लोग बिलकुल अंधेरे में हैं। उन्होंने प्रकाश को कभी जाना ही नहीं है। तो तुम्हारी चर्चा में भी फंस जाते हैं। तुम अगर प्रकाश की चर्चा भी शुरू कर दो, तो भी उन्हें खयाल होने लगता है कि जरूर कोई बात होगी।

फिर लोग बड़े कल्पनाशील हैं। जिसको वे सोच लेते हैं कि होगी, उसकी वे कल्पना करने लगते हैं। और जब कल्पना शुरू हो जाती है, तो स्वप्न दिखाई पड़ने शुरू हो जाते हैं। किसी की कुंडलिनी जगने लगेगी, किसी को प्रकाश दिखायी पड़ने लगेगा, किसी को रंग-बिरंगे दृश्य आने लगेंगे। और जब ये घटनाएं घटेंगी, तो वह जो आदमी बीच में गुरु बन कर बैठ गया है, उसका भरोसा और बढ़ जाएगा। इसलिए तो इतने गुरु हैं।

मैं ऐसे लोगों को जानता हूं, जिनको ध्यान का कोई भी पता नहीं है, जिन्होंने कभी उसका स्वाद ही नहीं लिया। लेकिन जिनके सैकड़ों शिष्य हैं। और जब वे गुरु मुझसे एकांत में मिलते हैं, तो वे भी यही पूछते हैं कि ध्यान कैसे करें? ध्यान क्या है?

नानक कहते हैं, ध्यान के संबंध में सोच-विचार कर कहना। क्योंकि यह आग से खेलना है। यह सूक्ष्मतम बात है। इससे सूक्ष्म कुछ और नहीं है। और न इससे कोई और ज्यादा मूल्यवान है। संसार से परमात्मा तक जाने का जो रास्ता है, उससे महीन, बारीक और कुछ हो भी नहीं सकता। इस संबंध में बहुत सोच-विचार कर कहना।

जहां से ध्यान हटेगा, वहां से अस्तित्व हट जाता है। जिस तरफ ध्यान जाएगा, वहां अस्तित्व प्रगट हो जाता है। और जिस दिन तुम यह समझ लोगे, उस दिन तुम अपने मालिक हो जाओगे। क्योंकि तुम्हें अपने भीतर के मालिक का पता चल गया। अब तुम नौकरों की नहीं सुनते

जे को कहै करै वीचारु।

पहले तो यह विचार कर लेना कि मैं जानता हूं? मुझे पता है?

अगर इस संसार में हर व्यक्ति एक बात तय कर ले कि मैं वही कहूंगा जो मुझे पता है, तो इस दुनिया का भटकाव मिट जाए। सिर्फ इतनी सी बात तय कर ले कि मैं वही कहूंगा, जो मुझे पता है। मैं अनाधिकार बात न कहूंगा। जो मुझे पता नहीं है, मैं स्वीकार कर लूंगा, मुझे पता नहीं है। अगर इतने पर भी मनुष्य राजी हो जाए, तो इस दुनिया से भटकाव मिट जाए। और सत्य को खोज लेना कठिन न हो।

लेकिन इतना असत्य है चारों तरफ, इतने व्यर्थ के जाल हैं, इतना झूठा गुरुत्व है, कि तुम ठीक गुरु को खोज भी न पाओगे। नानक को खोजना

मुश्किल हो जाएगा। क्योंकि चारों तरफ न मालूम कितने लोग दावेदार हैं! तुम कैसे पता लगाओगे, कौन सही है? कौन झूठ है? कोई कसौटी भी नहीं है।

इसलिए नानक कहते हैं, बहुत विचार कर ही कोई कहे, जान लिया हो तो ही कहे, पहचान लिया हो तो ही कहे। क्योंकि तुम जीवन से खिलवाड़ न करना। तुम जब दूसरे को सलाह दे रहे हो, तब तुम दूसरे के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हो। अगर तुम्हें पता नहीं है, तुम भटका दोगे। तुम्हें भला गुरु होने का मजा आ जाए! लेकिन इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता कि तुमने किसी को ज्ञान के मार्ग से भटका दिया। हत्या भी इससे कम पाप है। चोरी कुछ भी नहीं है। बेईमानी, धोखाधड़ी कुछ भी नहीं है। क्योंकि चोरी में तुम क्या करोगे? किसी की जेब से रुपया निकाल लोगे। रुपए का मूल्य कितना है? हत्या में तुम क्या करोगे? किसी का शरीर काट डालोगे। नया शरीर उपलब्ध हो जाएगा, क्योंकि जीवन का कोई अंत नहीं है। तुम किसी को मार सकते नहीं। हिंसा ऊपर-ऊपर है, भीतर हो नहीं सकती। कपड़े ही छीन सकते हो, आत्मा तो न छीन लोगे। तुम किसी को धोखा दोगे, क्या धोखा दोगे? कुछ क्षुद्र सी चीज पा लोगे।

लेकिन अगर

तुमने गुरु होने का भ्रांत भाव पैदा करवा दिया, और तुमने वे बातें बतायीं जिनका तुम्हें पता नहीं, तो तुम व्यक्ति को जन्मों-जन्मों तक भटका दे सकते हो। इससे बड़ा और कोई धोखा नहीं हो सकता। और इससे बड़ा कोई पाप नहीं हो सकता। अज्ञानी गुरु जैसा महापाप करता है, वैसा महापाप कोई भी नहीं कर सकता।

और ध्यान रखना, जब एक व्यक्ति बहुत से गलत गुरुओं के पास भटक लेता है, तो उसकी आस्था खो जाती है, उसका भरोसा टूट जाता है, उसकी आशा मिट जाती है। और धीरे-धीरे उसे ऐसा लगने लगता है कि सब पाखंड है। जब निन्यान्नबे के पास पाखंड है तो एक के पास कैसे सत्य होगा? और जो निन्यान्नबे के पास पाखंड से गुजरा है, वह अगर एक के पास भी आ जाए, नानक के पास भी आ जाए, तो भी अपने को सम्हाल कर ही रखेगा। कि निन्यान्नबे जगह धोखा खाया, पता नहीं यहां भी धोखा हो! इस संसार में इतनी नास्तिकता है, उस नास्तिकता का कारण गलत गुरु है। लोगों की आस्था खो गयी है। नास्तिकता विज्ञान के कारण नहीं है। और न नास्तिकता नास्तिक दार्शनिकों के कारण है। नास्तिकता का मौलिक कारण पाखंडी गुरु हैं। क्योंकि इतना भरोसा तोड़ दिया है कि अब यह भरोसा ही करना संभव नहीं है कि कोई गुरु है। और यह भी भरोसा करना संभव नहीं है कि कोई परमात्मा है। क्योंकि जब गुरु ही नहीं तो परमात्मा कैसे होगा। ये गुरु, परमात्मा, और यह सब जाल, लोगों के शोषण की विधियां हैं। ऐसे लोगों की प्रतीति हो गयी है। भले लोग इतने भटकाए गए हैं।

इसलिए नानक कहते हैं, जो भी इस संबंध में कुछ कहे, वह बहुत विचार कर कहे। आग से खेलना है। दूसरों को जीवन दांव पर लगाने की बात कहनी है। सोच कर कहे, अन्यथा चुप रहें।

– ओशो
एक ओंकार सतनाम,
सातवां प्रवचन
(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)